भजन

तर्ज–मेरे दो अनमोल रत्न

मेरा तो घर मूल वतन,परआतम के हैं जहां तन

1– मूल वतन धनी ने बताया,परआतम का भेद लखाया
खोल दिए हैं निज नैनन

2–अपने धनी को जिसने रिझाया,इत बैठे सुख धाम का पाया
हो गये वो इत उत धन धन

3– ए सुख निसवत से जाना है,निसवत वालों ने माना है
जो हैं प्रीतम की सैंयन

4– अपने घर अब तो जाना है,साथ पिया तेरे रहना है
है जहां थिरचर सब चेतन